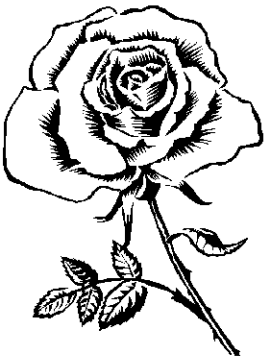

बोध-कथाएँ

एक बार पुरुषार्थ के संदर्भ में आपने बताया "एक भक्त किसान जब अपना हल जोत रहा था तो उसने एक बाज पक्षी को पेड़ पर घोंसले में बैठे कौए के छोटे बच्चे के मुँह में माँस का टुकड़ा डालते देखा। किसान को ख़याल आया कि परमात्मा जब बाज के जरिये कौए के बच्चे को ख़ुराक पहुँचा सकता है तो वह मुझे क्यों नहीं पहुँचायेगा? ऐसा सोच कर किसान हल चलाना छोड़ कर पेड़ के नीचे बैठ गया। जब काफी समय गुज़र गया तो अचानक उसे आवाज़ सुनाई दी कि "अरे तू इन्सान होकर भी अपाहिज कौआ क्यों बनता है, बाज क्यों नहीं बनता, जो ख़ुद खाता है और दूसरों का भी पोषण करता है।" यह सुनते ही उसे अपनी गलती का अहसास हुआ और वह फिर से उत्साहपूर्वक अपना हल चलाने में जुट गया।"

सांसारिक ऐश्वर्य की नश्वरता के बारे में समझाते हुए आपने कहा "किसी राजा के पेट में अचानक तेज दर्द उठा। मन्त्रियों ने सभी तरह के उपचार करवाए, लेकिन दर्द बढ़ता ही गया। जब राजा मरणासन्न हो गया तो किन्हीं सिद्ध महात्मा को प्रार्थना कर बुलवाया गया। महात्मा ने आकर राजा को सीधा लिटाया और उसकी नाभि पर धीमे से एक मुक्का मारा। इससे राजा के पेट में रूकी हुई वायु निकल गई और दर्द मिट गया। राजा के प्राण बच गये। राजा ने कृतज्ञ होकर महात्मा को भेंट स्वरूप अपना आधा राज्य देना चाहा। इस पर महात्मा ने गम्भीर हो राजा से कहा "राजन! जिस राज्य की कीमत एक पाद के बराबर है, उसे लेकर मैं क्या करूँगा?" यह सुन राजा के मन में तीव्र वैराग्य जाग उठा; किन्तु महात्मा जी के समझाने पर वह निष्काम भाव से जन-सेवा में लग गया।"

एक राजा अपने वज़ीर की लड़की पर मोहित हो गया। वह इसी चिन्ता में घुलने लगा। आखिर उसने एक दिन यह बात वज़ीर को बतलाई। वज़ीर ने अपनी लड़की से इसका ज़िक्र किया। लड़की बड़ी समझदार थी। उसने कहा कि राजा से कह देना कि वह सातवें रोज़ रात्रि को आ जावें। जब नियत दिन आया तो राजा वज़ीर के घर पहुँचा। वज़ीर ने बताया कि वह साथ वाले कमरे में सोई है। राजा ने जाकर जब उसे देखा तो बड़ा हैरान हुआ। वह बड़ी दुर्बल और बीमार लगी। राजा ने उससे पूछा कि तुम्हारा वह सौन्दर्य कहां गया, तो उसने बताया कि वह उस मिट्टी के बर्तन में पड़ा है। लड़की ने जुलाब ले रखा था। राजा ने जब बर्तन देखा तो कहा - यह क्या है? यह तो

बदबूदार मलमूत्र है। लड़की ने उत्तर दिया कि यही तो मेरा यौवन था, जो इसमें भरा पड़ा है। राजा को होश आया और मन में वैराग्य पैदा हो गया।

एक आदमी ने अपने छाया पुरुष को सिद्ध कर लिया। जब वह प्रकट हुआ तो कहने लगा कि मुझे काम चाहिये, नहीं तो मैं तुम्हें मार दूँगा। उसने उसे एक के बाद एक काम बताया, किन्तु छाया पुरुष तुरन्त काम पूरा करके आ जाता। वह आदमी बड़ा घबराया कि अब इसे कौन सा काम बताऊँ? काम नहीं बताया तो यह मुझे मार देगा। अन्त में उसे एक उपाय समझ में आया। उसने उससे कहा कि बाहर यह बाँस जमीन में गाढ़ लो। जब तक मैं और काम बताऊँ तब तक तुम इस पर चढ़ते-उतरते रहो। इस तरह उसका छुटकारा हुआ।

फिर फ़रमाया - इसी तरह मन को भी किसी न किसी काम में लगाये ही रखना चाहिये।

एक सेठजी किन्ही महात्मा के पास सत्संग के लिए जाया करते थे। लेकिन कभी-कभी उनकी सत्संग से नागा हो जाती थी। महात्मा के कारण पूछने पर वे बताते कि उन्हें व्यापार में पैसों की तंगी रहती है, गुज़ारा मुश्किल से हो पाता है। इसीलिए कभी-कभी सत्संग छूट जाता है। इस पर महात्मा ने उससे पूछा कि कितने

रुपयों में काम चल जायेगा। सेठ जी कहने लगे कि 100 रुपये और हो जायँ तो काम अच्छा चलने लगेगा। महात्मा जी ने वहाँ पड़ा एक ठीकरी का टुकड़ा उठाया और उस पर 100 रुपये का अंक लिख दिया। सेठ के पास ईश्वर कृपा से 100 रुपये आ गये, किन्तु सेठ जी का लालच बढ़ने लगा। सत्संग में जाना और कम होने लगा। महात्मा जी के पूछने पर वे जब पैसों की तंगी का ही कारण बताते, तो महात्मा उसी ठीकरी पर एक और बिन्दी बढ़ाते जाते। सेठ की आमदनी बढ़ती गई, लेकिन महात्मा जी के सत्संग में पहुँचना कम होता गया। सेठ जी जब कई महीनों के बाद एक बार महात्मा जी के पास पहुँचे, तो उन्होंने इतने समय बाद आने का फिर से कारण पूछा। सेठ ने जब इस बार भी धन की तंगी का कारण बताया, तो महात्मा ने उससे ठीकरी ली और इसे पत्थर से फोड़ दिया। सेठ इसके बाद लालच छोड़ नियमित सत्संग में आने लगे।

आपने अपने आचरण की ओर इशारा करते हुए एक बार कहा कि एक दिन किसी फ़क़ीर के पास एक स्त्री अपने बच्चे को लेकर आई और उन्हें बताया कि हुज़ूर मेरे इस बच्चे को समझाइये, यह काफी गुड़ खाता है। मैनें हर तरह कोशिश की, लेकिन यह मानता ही नहीं है। आपकी यह इज़्ज़त करता है और आपका कहना यह ज़रूर मानेगा। फ़क़ीर ने प्रेम से बच्चे की ओर देखा और उसकी माँ से तीन सप्ताह बाद आने के लिए कहा। महिला जब तीन सप्ताह बाद उसे लेकर आई तो फ़क़ीर ने उसे फिर से तीन सप्ताह बाद आने को कहा। महिला वापिस चली गई। जब वह फिर से बच्चे को लेकर पहुँची तो फ़क़ीर ने बच्चे को प्यार से कहा कि सुनो बेटे! गुड़ मत खाया

करो, गुड़ खाना ठीक नहीं है। बच्चे ने तुरन्त स्वीकार कर लिया और उसी दिन से गुड़ खाना बन्द कर दिया। इस पर महिला ने उनसे पूछा कि इसे आप छः सप्ताह पहले भी मना कर सकते थे, आपने इतना समय क्यों लगाया। फ़कीर ने कहा कि गुड़ मैं खुद भी खाता था, मुझे यह पसन्द है; फिर मैं कैसे इस बच्चे को मना कर सकता था। मैंने तीन सप्ताह कोशिश की लेकिन बन्द नहीं हो पाया, इसीलिए तुम्हें फिर से आने को कहा। अब मैं खुद गुड़ नहीं खाता। इसीलिए बच्चे को भी इसके लिए कह सका और वह मेरी बात मान सका। दूसरों को समझाने से पहले अपना आचरण ठीक होना चाहिए।

गुरु के प्रति पूरी आस्था के सन्दर्भ में आपने एक किस्सा सुनाया - ''एक बार जब नारद मुनि भगवान से मिलकर गये तो भगवान ने उस स्थान का चौका लगवाया जहाँ वे बैठे थे। बीच में किसी कारणवश जब नारद जी भगवान के पास वापिस लौटे तो उन्होंने इसका कारण पूछा। भगवान ने कहा कि आप निगुरे हैं, इसलिए जहाँ आप बैठे थे, उस जगह को पवित्र करने के लिए चौका लगाया गया। यह सुन नारद मुनि को दुःख हुआ। वह उसी समय गुरु की तलाश में निकल गये। उन्होंने संकल्प किया कि जो भी आदमी सवेरे सबसे पहले मिलेगा, उसी को गुरु रूप में स्वीकार कर लूँगा। संयोगवश सुबह-सुबह शहर के बाहर एक मछुआरा जाता हुआ दिखाई दिया। संकल्प के अनुसार नारद जी को उसे गुरू बनाना पड़ा। जब नारद मुनि फिर से भगवान के दरबार में गये और बताया कि उन्होंने गुरू तो किया, लेकिन वह तो मछुआरा है। इस पर भगवान ने कहा कि आपने 'लेकिन' कह कर गुरू का अपमान किया है जिसके लिए

आपको चौरासी लाख योनियों का चक्कर काटना पड़ेगा। नारद जी बड़े भयभीत हुए और वापिस अपने गुरू (मछुआरे) के पास पहुँच कर सारी बात उन्हें बताई। इस पर मछुआरे ने वहीं रेत पर 84 खाने बना कर उनसे कहा कि चिन्ता न करें, आप इन पर लोट लीजिये, ये भुगत जायेंगे।

नारद मुनि ने श्रद्धापूर्वक ऐसा ही किया। गुरू में श्रद्धा-विश्वास से सब काम बन जाते हैं।

एक बार सन्त कबीर दास जी की लड़की कमाली की शादी का किस्सा सुनाते हुए फरमाया कि कबीर साहिब की पत्नी ने अपनी लड़की की शादी के इंतिज़ाम के लिए एक बढ़िया थान बना कर रखा था। उन्होंने कबीर जी को यह थान बेच कर शादी का सामान लाने को कहा। थान लेकर जब वे रवाना हुए तो उन्हें रास्ते में कोई बूढ़े सन्त सर्दी में ठिठुरते दिखाई दिये। कबीर जी ने उन्हें आधा थान देने का इरादा किया, लेकिन उन्होंने पूरा थान देने को कहा। कबीर जी ने पूरा थान उन्हें दे दिया और घर आकर पत्नी को बताया। पत्नी बड़ी दुःखी हुई। बारात और शादी के लिए उन्होंने कुछ पुराना रेशम बेचने के लिए इन्हें दिया और बेटे कमाल को भी साथ में भेज दिया ताकि फिर से इसे भी किसी को न दे डालें। दोनों रेशम लिये जब रास्ते से जा रहे थे तो उन्हें एक कसाई गाय को बाँधे लिये जाता दिखाई दिया। उसने पूछने पर बताया कि अपनी लड़की की शादी के लिए वह इसे काटकर बेचेगा। कबीर जी ने अपना रेशम देकर गाय को छुड़वा दिया। फिर शर्म के मारे दोनों खेत में घास के पीछे छिप कर बैठ गये और परमेश्वर का गुणानुवाद करने लगे। इसी बीच उनके घर बारात आ पहुँची।

उनकी पत्नी और पुत्री कमाली कबीर जी का बेसब्री से इन्तज़ार कर रहे थे। यह देख भगवान ख़ुद कबीर बन कर आ गये और बारातियों की ख़ूब आवभगत की। आपने सभी बारातियों को एक-एक अशर्फी भेंट में दी। बाराती ख़ुशी में 'जय कबीर' 'जय कबीर' कहते हुए जब जा रहे थे तो लड़के कमाल ने सुना और दोनों ख़ुशी-ख़ुशी गर्व के साथ घर लौटे। बारातियों ने दो कबीर देखकर शक किया और वापिस नाराज़ होकर घर लौटने लगे। कबीर जी को अपने अहंकार का एहसास हुआ। कबीर वेषधारी प्रभु अन्तर्ध्यान हुए और बारात के लोग आश्वास्त हुए। मालिक इसी तरह अपने भक्तों की लज्ञा रखते हैं।

एक बार नारद जी ने भगवान से कहा कि प्रभु संसार के प्राणी भारी दुःख झेल रहे हैं। आप ऐसे दुःखी जीवों को बैकुण्ठ में जगह क्यों नहीं देते?

भगवान ने मुस्कराते हुए कहा, ''अच्छा नारद जी जाओ, ले आओ ऐसे लोगों को।''

नारद जी संसार में विचरने लगे। चलते-चलते उन्हें रास्ते में एक बुढ़िया मिली, जिसकी परिवार वाले बात-बात में बेइज़्ज़ती करते। कोई उसका पानी का लोटा उठा ले लाता, कोई बद्धा सिर में मार जाता। नारद जी ने सोचा कि इससे बढ़कर कौन दुःखी हो सकता है।

नारद जी ने निकट आकर उससे कहा, ''अम्मा तुम यहाँ बहुत दुःखी हो; चलो, मैं तुम्हें भगवान के पास बैकुण्ठधाम ले चलूँ। वहाँ सब प्रकार के सुख हैं।''

बुढ़िया ने उत्तर दिया। ''अरे नहीं महाराज, मैं तो यहाँ आराम से हूँ। अपने इन बेटे-पोतों को छोड़कर कहाँ जाऊँ!''

जब नारद जी ने आग्रह किया तो बुढ़िया कहने लगी- ''मेरे दो पोते अभी कुँवारे हैं, उनकी शादी हो जाने पर जरूर चलूँगी, अभी नहीं।''

नारद जी कुछ वर्षों बाद फिर से उसके पास आये और उससे चलने को कहा, तो वह बोली- ''बस बड़े परपोते की शादी हो जाये, फिर ज़रूर चलूँगी।''

जब नारद जी तीसरी बार फिर से आये तो उन्हें बुढ़िया नहीं मिली। नारद जी ने अन्तर्दृष्टि से देखा तो उन्हें पता लगा कि वह मर कर कुत्तिया बनी वहीं घर के दरवाजे पर बैठी है।

नारदजी ने उसके पास जाकर धीरे से पूछा, ''अब बैकुण्ठधाम चलती हो क्या?''

कुत्तिया ने जवाब दिया, ''कैसे चलूँ महाराज, इस घर की रखवाली कौन करेगा? इन लोगों को तो घर की परवाह ही नहीं हैं। मैं जीते जी कैसे बिगाड़ देख सकती हूँ।''

इस संसार का यही हाल है। सारी तकलीफें उठाकर भी इन्सान इतना मदहोश है। सब प्राणी अपने हाल में मस्त हैं। भगवान की लीला अपार है।

शम्स तबरेज़ ख़ुदा की याद में मस्त रहते थे। एक बार एक शहज़ादा मर गया, जिसका जनाज़ा जाता हुआ देखा। आपसे किसी ने प्रार्थना की- 'आप ख़ुदा के बन्दे हैं, कृपा कर आप इसे जिन्दा कर दीजिये।' आपने उसे वहीं रख देने को कहा। फिर आपने कहा- 'कुम्बे इबनी अल्लाह' (उठ ख़ुदा के हुक्म से)। इस पर भी जब मुर्दा न उठा तो आपने फरमाया 'कुम्बे इबनी' (उठ मेरे हुक्म से)। इस पर शहज़ादा जिन्दा हो गया। बड़ी ख़ुशियाँ मनाई गईं, किन्तु बादशाह बड़ा समझदार और उसूलों वाला था। जब यह खबर सुनी तो उसने एक सभा मौलवियों की बुलाई और इसकी सज़ा पूछी। उन्होंने बताया कि ऐसे व्यक्ति को तो जिंदः ही खाल खिंचवा कर भूसा भरवाने की सज़ा है। बादशाह ने यही हुक्म दे दिया। जल्लादों की शम्स के तप के कारण पास पहुँचने की हिम्मत न थी। उन्हें अपने आस-पास चक्कर लगाते देख शम्स तबरेज़ ने पूछा और सबब जानकर अपने बाल पकड़कर कहा- 'छोड़ दो इसे'। इसके साथ ही उनकी सारी खाल खोल की भाँति निकल आई और जल्लादों को दे दी। उसमें भूसा भरवाया गया। उनके रक्त-रंजित शरीर से सब घृणा करते। किसी कसाई ने काफी दिनों बाद एक बोटी दी। आपने बोटी सेकने के लिए सूर्य को कहा- 'तू भी शम्स, मैं भी शम्स'। सूर्य मुल्तान में आज भी नीचे है।

गुरु की सामर्थ्य का ज़िक्र करते हुए फ़रमाया कि एक आदमी कई तरह के ऐब करता था। वह एक दिन किन्हीं समर्थ महात्मा के पास पहुँचा और उन से कहा कि क्या आप मुझे अपना शिष्य बना सकेंगे। मैं अमुक-अमुक ऐब करता हूँ। आप मुझे इनसे मना नहीं करेंगे। यह सुन सन्त ने जवाब दिया कि ठीक है, मैं तुम्हें

मना नहीं करूँगा, लेकिन मेरे सामने तो ऐसा कोई ऐब नहीं करोगे? वह मान गया और उनका शिष्य हो गया। इसके बाद वह जब भी कोई गलत काम करने को होता तो उसे गुरु महाराज मौजूद दिखाई देते और वह गलत काम नहीं कर पाता। इस तरह उस आदमी के ऐब खुद-ब-खुद छूट गये।

आपने महाभारत के अर्जुन की अन्तिम दिनों की असहाय अवस्था का वर्णन किया। महाभारत की लड़ाई खत्म हो जाने के बाद अर्जुन ने कृष्ण से पूछा कि अब कौन किसके साथ युद्ध कर सकेगा। उन्होंने उत्तर दिया कि कोई ज़रूर करेगा। कृष्ण भगवान जब परमधाम जाने लगे तो अर्जुन को बुलाया। भाई युधिष्ठर ने उन्हें आगाह किया कि उन्हें छूना मत अन्यथा, तुमने गर्व किया था, वह सारी शक्ति छीन लेंगे। अर्जुन ने उन्हें बाण पकड़ कर उठाया तो शक्ति कृष्ण भगवान ने वापिस एक बार ले ली। मार्ग में लौटते समय गोपिकाओं को डाकुओं ने लूटना चाहा। अर्जुन ने काफी बाण-वर्षा की जिसे उन्होंने अपने दुपट्टों से एक ओर झाड़ दिया और सबको ले गये। गर्व चूर्ण हुआ और फिर हिमालय की ओर गलने चले गये। युधिष्ठर ने अपने सभी कुलजनों को तार दिया।

समय-समय की होत है समय बड़ा बलवान।
डाकू लूटी गोपिका, वही अर्जुन वही बाण।।

गर्व नहीं करना चाहिये, सब उसी की शक्ति कार्य कर रही थी।

एक बार कबीर साहिब सन्त रैदासजी से मिलने पधारे। खूब सत्संग चलता रहा। इसी बीच कबीर साहिब को प्यास लगी और उन्होंने पानी माँगा। रैदासजी ने जूते गांठने की कूँडी का पानी कबीर साहिब को पेश किया। कबीर साहिब को बड़ी ग्लानि हुई, लेकिन संकोचवश कुछ कहा नहीं और ओख से कूँडी का पूरा पानी नीचे बहा दिया, पिया नहीं। इस पानी से कबीर जी की अँगरखी की कोहनी में गहरा दाग हो गया। इस अँगरखी का दाग छुड़ाने के लिये जब कबीर साहिब की सुपुत्री कमाली ने इसे मुँह से चूसा तो वह त्रिकालज्ञ हो गई।

एक दफ़े जब कबीरदासजी और रैदासजी कहीं से आ रहे थे, तो कमाली ने पहले से ही उनके लिए गरमा-गर्म खाना थालियों में लगा कर तैयार रख दिया। कबीर साहिब को आश्चर्य हुआ और कमाली से पूछा तो उसने सारा हाल बताया। यह सुन कबीर साहिब को अफसोस हुआ कि उस दिन उन्होंने पूरा पानी नीचे बहा दिया। एक बार जब कबीर साहिब फिर रैदासजी के पास सत्संग के लिए पहुँचे और प्यास लगने के बहाने कूँडी का पानी पिलाने का आग्रह किया तो रैदासजी कहने लगे :-

पाया था तब पिया नहीं, तब मन में अभिमान किया।
बीत गया सो चला गया, वह पानी मुल्तान गया।।

राग-द्वेष के बारे में प्रबोधन करते हुए एक अन्य अवसर पर कबीर साहिब के बारे में किस्सा सुनाया। एक बार कोई बहुत बड़े बुजुर्ग बड़ी दूर से चल कर कबीर साहिब से मिलने पधारे। कबीर साहिब त्रिकालदर्शी थे। जब उन्हें पता लगा कि ये बुजुर्ग आपसे मिलने आ रहे हैं, तो भंगी से कह कर अपने घर के दरवाजे पर सूअर

बंधवा दिये। बुजुर्ग पूछते हुए जब आपके घर के दरवाजे तक पहुँचे तो वहाँ सूअर बंधे देख वापस लौटने लगे। कबीर साहिब बाहर ही टहल रहे थे। उन्होंने इन्हें वापिस लौटते देख कर पूछा कि आप किनसे मिलना चाहते हैं। उन्होंने कहा कि मिलना तो कबीर साहिब से था, लेकिन उन्होंने तो घर के बाहर बदजात सूअर बाँध रखे हैं। इस पर कबीर साहिब बोले कि उन्होंने तो सूअर घर के बाहर बाँध रखे हैं, लेकिन आपने तो इन्हें अपने दिल में बांध रखा है। बुजुर्ग इशारा समझ गये और फिर कबीर साहिब का शुक्रिया अदा करते हुए सत्संग का लाभ लिया।

सर्वस्व समर्पण का ज़िक्र करते हुए एक बार आपने फरमाया "शेख सादी बड़े खुशनुमा साफ-स्वच्छ रहते थे। जब अपने गुरूदेव से दीक्षा का समय आया तो वे बड़ा इत्र-फलैल लगा कर सेवा में रवाना हुए। गुरु ने हुक्म दे रखा था कि जब शेख सादी दरवाजे में से गुजरे तो उन पर कचरे की टोकरी उंडेल दी जाय। ऐसा ही किया गया। शेख सादी बड़े दुःखी हुए। फिर से जाकर स्नानादि कर साफ-सुथरे होकर जब दरवाजे से अन्दर घुसे तो फिर से उन पर कचरा उंडेल दिया गया। शेख सादी इस बार शान्त रहे। चूँकि दीक्षा का समय हो चुका था, इसलिए वे जब कचरे से सने हुए ही अपने गुरु महाराज के सामने पहुँचे, तो उन्होंनें कहा कि बहुत-खूब। बस इसी बात की कमी थी। फिर उन्हें दीक्षित किया और वे बहुत बड़े सन्त हुए।

एक नेक इन्सान रोज़ाना किसी भूखे-प्यासे को खाना खिला कर खुद खाना खाता था। उसने एक दफा किसी बूढ़े आदमी को खाने के लिए बुलाया। खाना शुरू करने से पहले उस आदमी ने खुदा का शुक्रिया अदा नहीं किया। यह देख कर इसने उसे याद दिलाया, लेकिन बूढ़े ने खुदा का नाम लेने से इन्कार कर दिया। इस पर उसने नाराज़ होकर उसे खाना खाने को मना करते हुए बाहर निकाल दिया। थोड़ी ही देर में आकाशवाणी सुनाई दी कि यह तुमने क्या किया। मैं उसे 70 साल से नाम न लेने पर भी बराबर खाना पहुँचाता रहा, लेकिन तुम उसे एक दिन भी खाना न खिला सके। अचानक यह सुन वह शर्मिन्दा हो उसे इज़्ज़त के साथ वापिस लिवा लाया और बड़े प्रेम से भर पेट खाना खिलाया। आत्मीयता सबसे बड़ी चीज़ है।

एक मस्त फ़क़ीर नाव में बैठे जा रहे थे। पास में तीन-चार मनचले युवक बैठे थे। फ़क़ीर की खोपड़ी घोटमोट थी जो चमक रही थी। युवकों ने फ़क़ीर से छेड़छाड़ की, बेअदबी दिखाई तथा फ़क़ीर के सिर में थाप मारने लगे। फ़क़ीर मस्त बैठे सब सहन कर रहे थे। मुख पर मुस्कान थी और घट में मालिक का नाम। आखिर अल्लाह यह सहन न कर सके। आकाशवाणी हुई- या तो इस बेअदबी को बन्द करने को कहो वरना आजाब उतरने वाला है। मस्त फ़क़ीर ने अर्ज़ किया कि ऐ मेरे मालिक मुझे यह सब सुहाता है। आप नाराज़ न हों। फिर वही हरकत चलती रही। आखिर आकाशवाणी हुई- अब सहन न होगा। मैं मेरे हबीब की यह हालत नहीं देख सकता। फ़क़ीर ने अर्ज़ किया यदि ऐसा है तो मेहरबानी

करके इनको सद्‌बुद्धि दें। युवकों की तरफ रहमत की नज़र फिरी और माजरा ही बदल गया। युवक पैरों में गिरकर माफी माँगने लगे। फ़क़ीर बैठा हँस रहा था।

भक्त को कभी अपनी साधना का अहंकार न हो जाये, इस संदर्भ में आपने एक बार सुनाया - "किसी ने कई साल तक कठोर तप किया, मगर उसे ईश्वर दर्शन नहीं हुए। एक दिन वह बड़ा दुःखी होकर ईश्वर से शिकायत करने लगा। इस पर उसी समय आकाशवाणी हुई कि तुमने इतने साल कहाँ बैठ कर तपस्या की है? तपस्वी ने बताया कि अमुक पेड़ के नीचे अमुक शिला पर बैठ कर। फिर से आकाशवाणी हुई कि ठीक है, अब इतने ही साल वह शिला तुम पर बैठकर तपस्या करेगी। यह सुन कर तपस्वी काँप उठा। उसका हृदय पश्चात्ताप से भर गया और तपस्या का अहंकार गिर गया। तभी उसे साक्षात्कार हुआ। अभिमान अच्छा नहीं है। शरणागति में ही सार है।"

एक जिज्ञासु किसी सन्त के पास आध्यात्मिक विद्या सीखने गया। सन्त ने बताया कि राम-राम किया करो। जिज्ञासु को यह बात न जची। उसने सोचा, जब तक अध्ययन न करूँगा, शास्त्र ज्ञान नहीं होगा। आध्यात्मिक विद्या कैसे आ सकती है। वह किसी गुरु से विद्या अध्ययन करने लगा। उन दिनों मुफ़्त में विद्या

सिखाई जाती थी। जिज्ञासु को गायों का गोबर थापने का काम सौंपा गया। बहुत दिनों बाद गुरू ने पूछा- कहो कुछ समझ में आया। वह हाथ जोड़ कर बोला जो बात समझ में आई, वह तो मुझे पहिले ही दिन बता दी गई थी। परन्तु मेरे भाग्य में इतने दिन गोबर थापना लिखा था।

एक सत्संगी बन्धु ने जब एक बार आपसे अर्ज़ किया कि मैं बहुत दुःखी रहता हूँ, मन में कतई शान्ति नहीं है। उधेड़ बुन बनी ही रहती है- जीने को जी नहीं चाहता। आपने उनको बड़े प्रेम से यह कहानी सुनाई - ''एक राजा था। उसका इकलौता राजकुमार एक दिन जंगल में शिकार खेलने गया। आते समय रास्ते में उसे एक रेशम का उलझा हुआ ढेर दिखाई दिया। राजकुमार इसे देखकर गहरे सोच में पड़ गया कि यह ढेर कैसे सुलझेगा। महल में लौट कर भी वह इसी सोच में लगा रहा। रात-दिन इसी चिन्ता के कारण उसका स्वास्थ्य गिरने लगा। राजा ने उसका खूब इलाज करवाया, लेकिन कोई फायदा नहीं हुआ। आखिर राजा ने घोषणा की कि जो भी राजकुमार को ठीक कर देगा, उसे मुँह माँगा ईनाम मिलेगा। यह सुन एक पुराने वैद्य ने आकर राजा से राजकुमार का इलाज करने की इजाज़त माँगी। वह राजकुमार के साथ ही रहने लगे। एक रात उन्होंने राजकुमार को नींद में बड़बड़ाते सुना कि यह कैसे सुलझेगा। वैद्य जी अगले दिन राजकुमार और उनके साथी को साथ लेकर उसी रास्ते से गये और जब उन्हें पता लगा कि इस उलझे रेशम के ढेर को देख कर ही राजकुमार की यह दशा हुई है, तो

उन्होंने माचिस निकाल कर उसमें आग लगा दी और जलते रेशम के ढेर को दिखाते हुए राजकुमार से कहा कि 'यह ऐसे सुलझेगा'। राजकुमार की चिन्ता सुलझ गई और वह स्वस्थ रहने लगा।

फिर फ़रमाया - हम व्यर्थ ही चिन्ताओं के जाल बुनते रहते हैं और फिर परेशान होते हैं।''

एक औरत जब अपने प्रेमी से मिलने भागी जा रही थी तो अचानक उसका पैर नमाज़ पढ़ते हुए किसी फ़क़ीर को लग गया। उसने उसे डाँटते हुए कहा कि अन्धी है क्या? देखती नहीं कि मैं ख़ुदा की नमाज़ अदा कर रहा था। उस औरत ने मॉफ़ी माँगते हुए कहा कि मैं अपने आशिक की याद में खोई थी, भागी जा रही थी, इसलिये आप मुझे दिखाई नहीं दिये, किन्तु आप तो ख़ुदा की याद में मशगूल थे, आपको मैं कैसे दिख सकी। फ़क़ीर ने उसे झुककर सलाम किया, उसका शुक्रिया अदा किया और कहा कि उसने उसकी आँख खोल दी।

सच्ची इबादत प्रेम की तल्लीनता में है।

समर्थ सद्गुरू की महिमा का बखान करते हुए एक बार आपने फ़रमाया कि एक बार एक व्यापारी किन्हीं सन्त के पास पहुँचा और उनसे समुद्र-यात्रा पर जाने की आज्ञा माँगी।

सन्त कुछ देर मौन रहे, फिर उसे यात्रा पर जाने से मना किया। अगले दिन यह आदमी किन्हीं दूसरे बुजुर्ग सन्त के पास पहुँचा और उनसे भी समुद्र-यात्रा पर जाने की इच्छा जाहिर करते हुए इजाज़त माँगी। उन्होंने इजाज़त दे दी।

यह आदमी यात्रा पर रवाना हो गया। यात्रा के दौरान एक दिन इस व्यापारी की झपकी लग गई। नींद में उसने स्वप्न देखा कि उसके जहाज पर चारों ओर से डाकुओं ने हमला बोल दिया और उस पर भाले से वार किया। इससे बचने के लिए जब उसने नींद में अपने हाथ से अपना सिर बचाया तो अचानक नाखून उसके माथे पर चुभ गया और खून टपकने लगा तो उसकी आँख खुल गई। उसने राहत की साँस ली और वापिस किनारे पहुँच गया। कुछ दिनों बाद जब दुबारा पहले सन्त से भेंट हुई तो व्यापारी ने उनसे इस घटना का ज़िक्र किया और उसे यात्रा पर जाने से मना करने का कारण पूछा। सन्त ने जवाब दिया कि यह संकट उनकी सामर्थ्य के बाहर था, इसीलिए उन्होंने उसे जाने से मना किया था। लेकिन दूसरे फ़क़ीर समर्थ थे। उन्होंने इस दुर्घटना को तुम्हें स्वप्न में भुगतवा दिया। समर्थ सद्गुरू के लिए सब कुछ मुमकिन है; वे सूली को सूल में टाल सकते हैं।

एक सेठ जी कथा सुनने जाते थे। एक दिन वे अपने लड़के को भी कथा में ले गये। कथा में पंडित जी ने सबके प्रति आत्मभाव और प्रेम का ज़िक्र किया। अगले दिन लड़के को दुकान पर बिठा कर सेठ जी कथा सुनने निकल गये। कथा सुन कर जब सेठ जी दुकान पर लौटे तो देखा कि एक गाय दुकान पर अनाज खा रही है। सेठ जी ने बाँस उठाकर जब गाय को मारना चाहा, तो लड़के ने

रोका। लेकिन, सेठ गुस्से में थे, उन्होंने आवेश में ज्योंही गाय की पीठ पर बाँस मारा तो लड़का बेहोश होकर गिर पड़ा और उसकी पीठ पर बाँस की मार का निशान उभर आया। यह देख सेठ जी बोले कि 'अरे तू तो कथा को बाँध कर ही ले आया। अब कभी मत जाना कथा सुनने।'

हम सुनते ज़रूर हैं, लेकिन श्रद्धापूर्वक उसे गुनते नहीं, इसलिए खाली रह जाते हैं।

एक बार राजा जनक से उनके गुरू ऋषि अष्टावक्र ने गुरु दक्षिणा के रूप में अपनी कोई चीज़ देने को कहा। जनक ने अपना राजपाट उन्हें देना चाहा, तो उन्होंने कहा कि यह तो परमेश्वर का है। अन्त में जब राजा जनक को अपना कुछ भी न लगा तो ऋषि ने उनसे कहा कि यह मन आपका है, इसे ही मुझे दे दें। जनक ने ऐसा ही किया। इस पर उन्होंने कहा कि जनक! अब यह मन मेरा हो गया है, ऐसा समझ कर सारा राज-काज कीजियेगा। अपना मन यदि सद्गुरु को सौंप दें और सारे काम उन्हीं के समझ कर, उन्हीं की खुशी के लिए करें तो सहज ही सब हो जाता है।

अमीर खुसरो के अनन्य गुरु प्रेम का ज़िक्र करते हुए एक दफ़े आपने बताया कि एक बार खुसरो कहीं माल-असबाब, हीरे जवाहरात लिए जा रहे थे। रास्ते में किसी जगह वे अचानक

कहने लगे कि मुझे अपने पीर की महक आ रही है। ढूँढ़ने पर पता लगा कि कोई गरीब आदमी उनके पीर ख़्वाजा मुइनुद्दीन चिश्ती की जूतियाँ लिए जा रहा था। ख़ुसरो ने अपना सारा माल-असबाब उसे देकर अपने पीर की जूतियाँ ले ली और इन्हें सिर पर रख नाचते हुए घर लौटे।

ख़ुसरो को अपने पीर से अनन्य प्रेम था। उनके पर्दा कर जाने (समाधि लेने) की ख़बर जब ख़ुसरो को मिली तो वे विह्वल हो तुरन्त उनकी मज़ार पर पहुँचे और उनकी याद में बेहोश होकर गिर पड़े। कुछ ही समय बाद उन्होंने यह कहते हुए प्राण छोड़ दियेः-

गोरी सोई सेज पर मुख पर डारे केश।
चल ख़ुसरो घर आपने, हुआ विराना देश।।

एक बार आपने गोस्वामी तुलसीदासजी महाराज की कथा सुनाई और बताया कि उन्हें अपनी पत्नी रत्नाबाई पर भारी आसक्ति थी। जब पहली बार वे अपने ससुराल से पीहर गई तो उनके बगैर उनसे नहीं रहा गया और आधी रात में एक मुर्दे को नाव समझ उसे पकड़ नदी पार कर ससुराल पहुँच गये। वहाँ दीवार पर चढ़ती गोह को रस्सी समझ, उसे पकड़ कर दीवार फाँद कर जब अपनी पत्नी के कक्ष में अचानक दाख़िल हुए तो पत्नी रत्नाबाई अवाक् रह गई और उन्हें प्रताड़ना देते हुए कहाः-

जैसा हेत हराम में, वैसा हरि से होय।
चलो जाय बैकुण्ठ में, पलो न पकड़े कोय।।

यह सुन तुलसीदासजी को वैराग्य जाग उठा और वे उसी समय प्रभु आराधना के लिए निकल पड़े। बाद में पतिभक्ता रत्नाबाई ने उन्हें लिख भेजाः-

राम जासु हृदय बसे, सो पति मम उर धाम।
एक बसावत दो बसे, रत्न भाग अभिराम।।

एक बड़े सन्त किसी पहुँचे हुए संत के दर्शनों के लिए उसके घर गये। उनकी बीबी से उनके बारे में उन्होंने पूछा तो वह झुँझलाकर बड़ी बुरी तरह उनसे पेश आई और कहा कि वह लकड़िया लेने जंगल गया है। वह संत जंगल को गये तो देखा कि वह शेर पर लकड़ियों का बोझ रखे चले आ रहे हैं। आगन्तुक पर बड़ा असर हुआ और विचारने लगा कि जैसा सुना था, वैसे ही पाया। घर के पास आने पर संत ने लकड़ियों का गट्ठड़ अपने सिर पर रखा, शेर गायब हो गया। इधर घर पहुँचते ही उन सन्त की बीबी ने उन्हें आड़े हाथों लिया और न-न कहने की बातें कहीं। आगन्तुक से न रहा गया। उसने पूछा ''यह क्या माज़रा है? आपकी करामात कमाल है, पर आपके घर में ऐसी औरत का क्या काम?'' संत ने हंस कर उत्तर दिया- ठीक ही तो है। अगर मैं अपनी बीबी को बर्दाश्त न करूँ तो यह खूँखार शेर मेरा बोझ क्यों ढोने लगा। जब मुझे गर्व आता है, तो यह उसका चूर्ण कर देती है। यह मेरा मुगदर है। आने वाले ने कहा- महाराज और कोई करामात दिखाइये। संत हँस कर कहने लगे- यह क्या कम करामात है कि इस घर में मेरी रोज़ फ़जीहत होती है, पर मैं हर हाल में खुश हूँ।

कुछ लोग किसी जगह से लम्बे सफ़र को चले। उस ज़माने में रास्ते बड़े भयानक होते थे। लोग बड़ी-बड़ी टोलियों में सफर करते थे। रास्ता ख़तरनाक था। रास्ते में एक महात्मा की कुटिया नज़र आई। सबने आकर आपसे अर्ज़ किया कि कोई ऐसी दुआ बता दीजिये कि जिसकी वजह से हमारे ऊपर सफ़र में कोई मुसीबत न आये। उन्होंने इसके जवाब में इतना ही फरमाया कि 'जब कोई मुसीबत आये तो तुम मुझको याद करना।' उस जमाने में भी सभी लोग विश्वासी रहे हों ऐसी बात तो न थी। लोग आपकी यह बात सुनकर मन ही मन मुस्कराए और यात्रा पर चल पड़े। राह में डाकुओं ने घेर लिया। एक शख्स जो अधिक धनवान था और जिसे लूटने के लिए डाकू भी विशेष आतुर थे, उसे महात्मा जी की वह बात स्मरण हो आई। उसने सच्चे दिल से उन्हें याद किया। तत्काल वह डाकुओं की नज़र से ओझल हो गया। डाकू बड़े चकित थे। औरों को लूट कर जब डाकू चले गये, वह शख्स नज़र आया, अपने माल-असबाब के साथ सही सलामत जहाँ पर था वहीं खड़ा दिखलाई दिया। लोगों ने आश्चर्यचकित होकर पूछा 'तुम कहाँ गायब हो गये थे?' उसने जवाब दिया 'मैंने महात्मा जी को याद किया और ईश्वर कृपा से मैं सबकी नज़रों से गायब हो गया।'

जब ये लोग सफ़र से वापिस हुए, तो लौटते समय महात्मा जी से पूछा 'यह क्या माज़रा है कि हम तो ईश्वर को याद करते रहे और लूटे गये और इस शख्स ने आपको याद किया और बच गया।' आपने फ़रमाया- 'तुम लोग ईश्वर को ज़ुबान से याद करते हो और मैं दिल से।' बस तुम ईश्वर को सच्चे दिल से याद करने वाले उसके किसी भी बन्दे को याद करो ताकि वह तुम्हारे लिए ईश्वर को याद करे और तुम सुरक्षित रहो। सिर्फ़ ज़ुबान से हज़ार बार भी याद करोगे, तो कुछ फ़ायदा न होगा।

एक बादशाह अपने में काम शक्ति की कमी अनुभव करते थे। उनको पता चला कि एक महात्मा हैं जो सबकी इच्छा पूरी करते हैं। बादशाह उनके पास गये और अपनी समस्या बताई। महात्मा ने उसकी बात ध्यान से सुनी और उसे एक पुड़िया दी कि इसे पानी के साथ सेवन कर लेना। बादशाह ने देखा कि महात्मा ने उसी समय उसके सामने ही दो पुड़िया स्वयं ली और पानी पी लिया। बादशाह ने उस पुड़िया का सेवन किया, तो उससे असीम काम शक्ति का उसको अनुभव हुआ। बादशाह के दिमाग में आया कि एक पुड़िया से ही मेरी कितनी काम शक्ति बढ़ गई है; इस महात्मा ने तो दो पुड़िया ली थी, ज़रूर यह व्यभिचारी है; अय्याशी करता होगा। उसने हुक्म दिया कि उस महात्मा को गिरफ्तार किया जाए और मेरे पास लाया जाये। उसने महात्मा से कहा कि तुम अवश्य व्यभिचारी हो। महात्मा ने उत्तर दिया- 'बादशाह आप काम-वासना के गुलाम हो, इसलिए उस पुड़िया ने तुम पर असर किया। मैं हर समय मौत को याद रखता हूँ, अतः मुझ पर इसका असर नहीं होता।'

बादशाह को ज्ञान हो गया और वह चरित्रवान हो गया।

कोई पहुँचा हुआ फ़क़ीर भीख माँगने के लिए राजमहल पहुँचा। वहाँ अस्तबल में सईस घोड़ों की लीद उठा रहा था। फ़क़ीर ने भोजन माँगा तो सईस ने घोड़ों की लीद की ओर इशारा कर कहा, 'वह रहा खाना' खा ले। फ़क़ीर यह कहकर चलता बना कि तेरे राजा के राज्य में यह लीद दिन दूनी, रात चौगनी हो। ऐसा ही हुआ, लीद का ढेर दिन-रात बढ़ते-बढ़ते पहाड़-सा हो गया। पूछने पर मालूम

हुआ कि एक फ़क़ीर के कहने पर यह लीद का पहाड़ बढ़ता जा रहा है। राजा चिंतित होकर फ़क़ीर के पास पहुँचा, ता फ़क़ीर ने कहा, 'राजन तेरे राज्य में कोई फ़क़ीर भूखा हो और उसे भोजन के बजाय लीद खाने को दी जाय, क्या यह ठीक है। इसकी सजा यही है कि वह लीद का पूरा पडाड़ अब तुम्हें खाना पड़ेगा। यह तुम्हारे कर्मों का भाग हो गया।' राजा फ़क़ीर के कदमों में गिर पड़ा और इससे छुटकारे का उपाय पूछने लगा। फ़क़ीर ने कहा कि जनता तुम्हारी निन्दा करे तो यह लीद समाप्त हो जायेगी।

राजा घोड़े पर सवार होकर शहर से जाते समय एक जवान ब्राह्मण कन्या को जबरदस्ती राजमहल उठा ले गया। बस, चारों ओर राजा की निन्दा होने लगी और जैसे-जैसे यह निन्दा बढ़ने लगी, लीद का पहाड़ कम होने लगा। अखिरकार एक थाली भर लीद रह गई, वह नहीं घटी। राजा फिर फ़क़ीर के पास पहुँचा तो फ़क़ीर ने कुछ विचार करके कहा, 'प्रजा ने तुम्हारी निन्दा कर तुम्हारे कर्मों को बाँट लिया, लेकिन एक भड़भूँजा तेरी निन्दा नहीं करता। अगर वह भी तुम्हारी निन्दा करने लगे तो शेष लीद भी समाप्त हो जायेगी।' राजा ने भेष बदला और जा पहुँचा भड़भूँजे के पास। कोई बहाना ढूँढ कर वह राजा (खुद की) निन्दा करने लगा। लेकिन भड़भूँजा ने निन्दा में उसका साथ नहीं दिया। भड़भूँजा खुद एक पहुँचा हुआ फ़क़ीर था, कहने लगा- 'राजन, आपकी झूठी निन्दा कर उस थाली भर लीद को कौन खाये। वह लीद तो आपके हिस्से की ही है और आपको ही खानी पड़ेगी।'

निन्दा अध्यात्म मार्ग में बहुत बड़ी रुकावट है। निन्दा करने से पहिले सोच लो कि जिस आदमी की निन्दा करोगे, उसके उतने ही बुरे कर्मों का भाग खुद को भोगना पड़ेगा।

एक साधु था। वह जिस रास्ते से अपनी भिक्षा के लिए जाता था, उस रास्ते में एक वैश्या रहती थी। जब भी साधु महाराज उधर से गुज़रते तो वह वैश्या उन्हें कटाक्ष करती कि 'तू मर्द है या नामर्द।' साधु महाराज कोई उत्तर दिये बिना उधर से गुज़र जाते। आखिर एक बार साधु महाराज बहुत बीमार पड़े और अपना अन्त समय जान कर उन्होंने अपने शिष्यों से कहा कि अमुक वैश्या को बुलाकर लाओ। शिष्य बहुत हैरान थे। वैश्या को बुलाया गया। वह साधु महाराज को इस दशा में देखकर बोली कि महाराज फरमाइये, किस लिए याद किया है। साधु ने कहा कि जब मैं तुम्हारी तरफ से भिक्षा के लिए गुज़रता था तो तुम मेरे लिये कुछ कहा करती थी, वह फिर कहो। वैश्या ने कहा कि आप मुझे क्षमा करें। किन्तु साधु महाराज और उनके शिष्यों के बहुत आग्रह करने पर वैश्या ने वह वाक्य दोहराया तो साधु महाराज ने उत्तर दिया, 'मै मर्द हूँ।' इस पर वैश्या ने कहा कि यह जवाब तो आप तब भी दे सकते थे। इस पर साधु महाराज ने कहा कि तब तक मुझे अपने मन पर भरोसा नहीं था। अब चूँकि मेरा आखिरी समय आ गया है, अतः मैं इतमीनान से कह सकता हूँ। साधु को तब तक भय रहना चाहिये, जब तक शरीर है। यह कहते ही उसने शरीर छोड़ दिया।

इसके बाद आपने फ़रमाया :-

मन को मृतक जानकर, मत करिये विश्वास।
साधु भय तब लगि करे, जब लगि पिंजर श्वास।।

☆☆☆